PRATHAM BOOKS
A Book in Every Child's Hand

कल्लू की दुनिया-२: मंच पर खिलंदड़ी

Author: Subhadra Sen Gupta
Illustrator: Tapas Guha
Translator: Manisha Chaudhry

पठन स्तर ४

खजूरिया गाँव में रामलीला का बुखार चढ़ा था। यह कोई नई बात नहीं थी। जैसे कि कल्लू का कहना था, यह तो सालाना बुखार था।

दशहरे से एक माह पहले, बुखार की शुरूआत आम बात थी। जैसे सावन के गहराते बादल गायब होते, और आसमान चकाचौंध करने वाले नीले रंग में रंग जाता, त्यौहारों की भीनी गंध हवा में छाने लगती। यही संकेत था कि सब की बातों में मास्टर जी और रामलीला का ज़िक्र ज़रूर होता।

गाँव में हर जगह, धरमपाल की चाय की दुकान में, सब्ज़ी के खेतों की निराई के समय, परचूनी की दुकान में, मोती दादी के आँगन में और कुएँ की जगत पर, सब की ज़ुबान पर एक ही सवाल होता।

“इस साल मास्टर जी क्या करने वाले हैं?”

कल्लू नतमस्तक होके कहता था, “मास्टर जी निर्माता, निर्देशक, संवाद लेखक व संगीत निर्देशक हैं रामलीला के और हम सब क्या देखेंगे यह स़िर्फ उन्हें ही पता है।”

मास्टर जी गाँव के स्कूल के प्रधानाध्यापक थे और उनकी खजूरिया रामलीला पार्टी हर साल बहुत ही बढ़िया खेल प्रस्तुत करती थी। अब पूरी रामायण करना तो उनके बूते के बाहर था क्योंकि इतनी लम्बी कथा में जितने पात्र थे, उतने अभिनेता खजूरिया में कहाँ जुट पाते। पर मास्टर जी ने कुछ मुख्य घटनाओं के संवाद लिखे थे और उनमें से दशहरे से पहले हफ़्ते में कुछ का मंचन होता था। खजूरिया में कौन से दृश्यों को देखने का आनन्द मिलेगा, यह किसी को पता ही नहीं होता था।
जिस मैदान में बदरी दूधिया की भैसें बँधतीं थीं, उसके कोने में शामियाना लगता था। वहीं जय भगवान टेन्ट हाउस की लरजती मेज़ों का मंच बनाया जाता। दर्शक ज़मीन पर बिछी दरियों पर बिराजते और गाँव में बिजली आ जाने से, मंच को गैस के हंडों व बिजली के बल्बों से रोशन किया जाता।

पहले दिन से ही कल्लू और उसका दस्ता स्कूल की
इमारत के आस-पास मँडराता रहता। वहाँ खेल की तैयारी चल रही थी। शायद मास्टर जी उन्हें कुछ करने को दें! कल्लू के दल में उसकी बहन मुनिया और भाई शब्बो, उसका सबसे प्यारा दोस्त दामू व उसकी बहन सरू थे।

हर दिन वे बैठ कर खेल की तैयारी होते देखते और उन्हें ज़्यादातर संवाद मुँहज़बानी याद हो गये थे।

हर साल मास्टर जी सीता स्वयंवर का प्रसंग ज़रूर चुनते जिसमें राम शिव का धनुष तोड़ते। कैकई और मंथरा की साज़िश जिससे राम को बनवास दिया जाता और दशरथ रोते-रोते प्राण तज देते, यह दृश्य भी ज़रूर लिया जाता।

मुनिया को वह प्रसंग सबसे अच्छा लगता था जिसमें लक्ष्मण शूर्पनखा की नाक काटते और जब रावण सीता को हर लेता। हनुमान का लंकादहन और फिर सबसे रोमांचक युद्ध जिसमें रावण, कुंभकर्ण और मेघनाद का राम, लक्ष्मण, हनुमान व वानर सेना से लड़ना होता।

इस साल उनकी मिन्नतें रंग लाई थीं और मास्टर जी ने कल्लू, दामू व शब्बो को वानर सेना में बंदरों की भूमिका दी थी। अंतिम युद्ध के दृश्य में उन्हें अभिनय का मौका मिला था। नेकर पहन के, बन्दरों की मुख सज्जा और लम्बी पूँछें लगाने का मौका मिला था। टीन की गदायें व तलवारें भाँजने में अहा! कैसा मज़ा था।

मुनिया और सरु तो जल भुन के राख हो गई थीं।

“कितनी बेकार की बात है!” सरु ने एक दिन सुबह स्कूल जाते हुए गंभीर मुद्रा में कहा था, “लड़कियाँ रामलीला में क्यों अभिनय नहीं कर सकतीं?”

“रात सीता को देखा था?” मुनिया पूछ बैठी, “कल्लू भैया की कक्षा में पढ़ता है वह लड़का और मूँछ भी दिखने लगी है...”

“और उसकी आवाज़ भी बार-बार फट रही थी,” सरु की हँसी छूट गई, “मुझे तो लगता है कि बिल्लो चाची कितनी अच्छी सीता बनतीं, है न?”

“हाँ, बिल्कुल। अगर उनके पति धरम चाचा राम बन सकते हैं तो वो सीता क्यों नहीं बन सकतीं?”

“उन्होंने तो मास्टर जी से कहा भी पर वे बोले कि खजूरिया पंचायत रामलीला ही बन्द करवा देगी... अगर उन्होंने वास्तव में औरतों से अभिनय करवाया। घत्त!” सरु ने मुँह बना के सर हिलाया।

“खैर आज रात तो बदरी भैया का बोलबाला है!” मुनिया खुशी से उछली, “हाय! शाम जल्दी क्यों नहीं होती!”

कल्लू और उसके दल के अनुसार तो शो का सितारा, सबसे बेहतरीन अभिनेता था बदरी। थोड़ा खिसका हुआ भैसों का मालिक, जो हमेशा हनुमान बनता था। नाटा, मोटा, उलझे बालों वाला बड़ा सर, बड़ी सी मूँछ, बड़ी-बड़ी गोल आँखें और दिल दहलाने वाली आवाज़, ऐसे थे बदरी भैया। जब बदरी मंच पर होता और चिल्ला के अपने संवाद बोलता हुआ चक्कर लगाता तो राम और लक्ष्मण भी फीके पड़ जाते।

जिस दुश्य में हनुमान रावण के साथ सवाल-जवाब करके लंका को जला देता था, उसे देख कल्लू और उसके दोस्त बिल्कुल दीवाने बन जाते। क्या दृश्य था! वाह! बिल्कुल सुपरहिट। मास्टर जी की कलम से ऐसे-ऐसे चुटीले संवाद निकल के आये थे कि जब रावण और हनुमान का वार्तालाप होता, तो दर्शक बिल्कुल दम साधे बैठे रहते कि एक शब्द भी कहीं छूट न जाये।

उस शाम, कल्लू और उसके दोस्त सबसे पहले तम्बू पर आ पहुँचे थे। बदरी की भैसें पास में बँधी थीं और दामू के शब्दों में उन्हें गोबर के पहाड़ों के ऊपर से हाइ जम्प लगा के आना पड़ता था।

“सामने से दूसरी और ठीक बीचों बीच! कितनी अच्छी जगह मिली है बैठने को!” शब्बो दरी पर बिराजता हुआ खुशी मना रहा था।

मुनिया और सरु को चिढ़ाने की गरज़ से कल्लू ने
मुस्करा के कहा, “कल तो हमें बैठने की जगह चाहिये ही नहीं, हम लड़के तो कल मंच पर होंगे।”

मुनिया ने घुँघराले बाल झटक के कहा, “हाँ हाँ!
बेवकूफ़ों की तरह इधर-उधर कूदते हो और तुम में से किसी को एक लाइन भी नहीं बोलनी हाँ!"

“और शब्बो को तो मेघनाद मार देगा और फिर उसे तो लड़की के लट्ठे की तरह सिर्फ पड़े रहना है।” सरु ने खिल्ली उड़ाई।

“कुछ पता भी है कि मरा दिखने के लिये सचमुच अभिनय करना पड़ता है?” शब्बो ने गुस्से में कहा “बहुत धीमे-धीमे साँस लेनी पड़ती है और आँखें कस के बन्द!”

“खजूरिया के सबसे अच्छे मृत वानर का खिताब तुम्हें ही मिलेगा।” दामू ने भी चुहल करी।

जैसे सूरज ढला, तम्बू में भीड़ बढ़ गई। मंच के पीछे मामला गरमाने लगा। सब अपनी पोशाकें पहनने व अपनी साज सज्जा में मशगूल थे। धरमपाल की आज छुट्टी थी क्योंकि आज के दृश्य में राम नहीं थे इसलिये वह बदरी के मुँह पर हनुमान का मेकअप लगा रहा था।

“बदरी, मेरी मानो तो मूँछ मुँडवा लो भैया,” धरमपाल बोला, “बड़ी अजीब लगती है। फ़िल्मों में और टीवी पर
हनुमान हमेशा मूँछ के बगैर होते हैं।”

“भूरी रंग दो तो किसी को पता नहीं चलेगा,” बदरी हुंकारा। “किसी भी हालत में नहीं मुँडवाऊँगा। कभी नहीं।” फिर उसने आँखें तिरछी करके संवाद के पन्नों

को पढ़ने की कोशिश की। “ये मास्टर जी हर साल संवाद बदलते क्यों रहते हैं हाँ?” वह भुनभुनाया।

“वे कलाकार हैं और सभी कलाकार थोड़े खिसके हुए होते हैं। इस साल भरत मिलाप के दृश्य में वे चाहते थे कि राम और भरत गाना गायें।” धरमपाल बोला।

“गाना?” बदरी चौंका।

“हाँ। कुछ कुछ ऐसा था, भाई-भाई का प्यार अमर रहे... कुछ-कुछ...” धरमपाल बोला।

“पर तुम तो गा नहीं सकते।” बदरी ने कहा।

“वही तो! और न लट्टू गा सकता है जो भरत बना हुआ है। दो दिन तक कोशिश करने के बाद माने मास्टर जी कि हम गा नहीं सकते। शुक्र है!” धरमपाल बोला।

अचानक बदरी उठ बैठा और पूरे ज़ोर से चिल्लाया, “मास्टर जी, मास्टर जी!” धरमपाल के हाथ से रंग छूट पड़ा। “क्या हुआ?” मास्टर जी घबराये हुए दौड़े आये।

“आपने राम के लिये गाना लिखा और हनुमान के लिये नहीं? जब कि मैं गा सकता हूँ।” बदरी बोला।

“अरे बदरी।” मास्टर जी ने मुँह में पान की गिलौरी ठूँसी, “हनुमान नहीं गाते।”

“और तुम गाओगे भी क्या?” धरमपाल ने बदरी की नाक पर सुर्ख़ लाल रंग ध्यान से लगाया, “हनुमान-रावण की दुश्मनी अमर रहे?”

“हा हा हो हो,” मास्टर जी हँसते हुए पान की पीक के फव्वारे छोड़ते आगे बढ़ गये।

धरमपाल ने बदरी के चटख पीले नेकर पर पूँछ लगाई। बदरी-हनुमान के भूरे पुते चेहरे पर क्या भाव खेल रहे थे इस पर किसी की भी नज़र नहीं पड़ी...

एक घंटे बाद पर्दा उठा तो लंका में रावण का राज दरबार जय भगवान टेंट हाउस के राज सिंहासनों, कालीनों व पर्दों से सजा हुआ सबकी आँखें चुँधियाने लगा। जय भगवान कुंभकर्ण की भूमिका अदा कर रहाथा क्योंकि वह गाँव का सबसे मोटा आदमी था।

दुश्य बहुत ही अच्छा चल रहा था और दर्शक पूरी
तल्लीनता से घटनाचक्र में रमे हुए थे। छोटे लाल, गाँव का पहलवान रावण बना था और मंदोदरी की भूमिका नारायण निभा रहा था। नारायण दसवीं कक्षा में पढ़ता था और गुलाबी, सुनहरी ज़री की साड़ी में खूब फब रहा था। अपनी मछली सी माँसपेशियों, घनी भवों, घुमावदार मूँछ व बड़ी आँखों के कारण रावण सच में डरावना लग रहा था। बस एक समस्या थी, वह भी छोटी सी। छोटे लाल को संवाद याद नहीं रहते थे।

“छोटे लाल को उसकी पंक्तियाँ याद कराने में मास्टर जी के नाकों चने चब गये,” दामू दबी ज़बान से बोला, “सब कुछ घालमेल कर देता है।”

“फिर मास्टर जी को एक तरकीब सूझी!” कल्लू
मुस्कराया।

“क्या?” सभी ने मुड़ के कल्लू से पूछा। “नारायण के होट देखो। छोटे को सब बता रहा है। मास्टर जी ने उसे मंदोदरी और रावण दोनों की पंक्तियाँ याद करवाईं!”

कल्लू फुसफुसाया।
“वाह ग़ज़ब!” मुनिया ने चुपचाप मास्टर जी का लोहा माना।

“आ गया!” सरु रोमांचित हो के मचल रही थी। हनुमान को कुछ राक्षस घसीटते हुए मंच पर लाये। सारे दर्शक आगे झुके। सब की आँखें हनुमान पर टिकी थीं। मोटी-मोटी रस्सियों से बँधा हनुमान तन के खड़ा गुस्से से रावण को घूर रहा था।

“कौन है ये?” मंदोदरी ने छोटे को फुसफुसाया। “हूँ...” रावण ने उसकी तरफ़ सर किया, सुना और फिर ज़ोर से कहा, “कौन है ये?”

एक राक्षस एक कदम आगे आया, “महाराज, अशोकवन से पकड़ के लाये हैं। देवी सीता से बात कर रहा था।” “क्या?” मंदोदरी फुसफुसाई।

“क्या?” रावण चिल्लाया और अचानक से उसे सारी पंक्तियाँ याद हो आईं, “वहाँ कैसे घुसा? क्या कर रहा था?” गुस्से से उसने अपनी भुजायें हिलाईं।

मुनिया धीमे से हँसी और फिर जैसे-जैसे और लोगों ने रावण का चेहरा देखा, वे भी हँसने लगे। जब रावण अपनी भुजायें हिला रहा था, उसकी नकली मूँछ का एक हिस्सा उसके गाल पर से छूट कर, उसके होठों पर काले केंचुए सा लटक आया था।

जहाँ कल्लू बैठा था वहाँ से उसे दिख रहा था कि मास्टर जी पूरे ज़ोर से हाथ हिला के, अपने चेहरे की तरफ़ इशारा कर रहे थे।

अपनी पंक्तियाँ कहने को तैयार हनुमान ने हैरानी से दर्शकों को देखा। यह तो गंभीर दृश्य था। किस वजह से हँसी आ रही थी इन्हें?

“क्या हुआ?” उसने अँधेरे में आँखें गड़ा के पूछा, “हँस क्यों रहे हो?”

“रावण की मूँछ गिर रही है बदरी भैया।” किसी ने पीछे से सूचना दे के हनुमान की उलझन सुलझाई। “ओ हो! सॉरी।” रावण घबरा के उछला और अपनी मूँछ वापस चिपकाई। फिर पसीने से तर चेहरा मंदोदरी की तरफ़

कर के उसने पूछा, “आगे क्या कहना है?” घबराहट में फुसफुसाना भूल गया और सब फिर हँसने लगे।

नेपथ्य में मास्टर जी की पान चबाने की गति और तेज़ होती गई।

“बोलो, कौन हो तुम... चोर वानर!” मंदोदरी फुसफुसाई।

“क्या?” रावण अभी भी सयंत नहीं हुआ था। “ठीक! बोलो कौन हो तुम... चोर वानर!” और आखिरकार वह
हनुमान की तरफ़ घूम के बोला, “कहाँ से आये हो?”
“अब आयी,” शब्बो उत्सुकता से आगे की ओर झुका, “मेरी सबसे मनपसंद लाइन।”

मास्टर जी ने कुछ महत्वपूर्ण संवाद कविता में लिखे थे और जहाँ हनुमान रावण को अपना परिचय देते हैं, ऐसी अच्छी कविता तो शब्बो ने कभी सुनी ही नहीं थी। और बदरी का अभिनय तो बस लाजवाब था।

वह पूरी तरह तन के खड़ा होता था और अपनी छाती ठोक के गुस्से में पूछता
“चोर वानर? तुम कौन हो मुझे ऐसा कहने वाले? तुम्हें पता है मैं कौन हूँ?”
फिर दर्शकों
से मुखातिब हो के वह कविता कहता जो शब्बो को ज़बानी याद थी...

मैं हूँ राम जी का चेला
मैं हूँ हनुमान अलबेला
तू है रावण बलवान
कर दूँ तुझको परेशान

एक नाटकीय ठहराव के बाद फिर से अपना सीना ठोक के पूरी ताकत से कहता-
मैं हूँ पवन पुत्र हनुमान!!

जैसे दर्शक दम साधे इंतज़ार कर रहे थे हनुमान ने रावण को घूरा और चिल्लाया
“तुम्हें पता है मैं कौन हूँ?” दर्शकों की तरफ़ घूम के गला खखार के साफ़ किया और अचानक से बदरी ने गाना शुरू कर दिया।
मैं हूँ राम जी काऽऽ चेलाऽऽऽ

मैं हूँ राम जी काऽऽ चेलाऽऽऽ

“अरे ये गा रहे हैं?” सरु की आँखें फैल गईं।
मैं हूँ... हनुमाऽऽन... अलबेलाऽऽ हनुमान का गाना
जारी था।

“वाह! अच्छा गा रहे हैं!” कल्लू खुशी से उछल पड़ा “बदरी भैया तो सच में गा सकते हैं।” मंच की बगल में मास्टर जी बिल्कुल स्तब्ध खड़े थे मानो उन पर गाज गिरी हो। उनकी रामलीला का चमकता सितारा-बदरी दिल खोल के गा रहा था और मास्टर जी जीवन में पहली बार पान चबाना ही भूल गये।

बदरी गाता रहा, एक हाथ उठाये जैसे फ़िल्म का हीरो हो। उसकी आँखें छत पर टिकी थीं। उसकी धुन में आकर्षक लय थी और दर्शक उसके साथ ताली देने लगे। नारायण भूल गया कि वह मंच पर था और उसने भी ताली दी। एक राक्षस लय के साथ मटकने लगा। बदरी मुस्कराने लगा और मस्ती से सर हिला के उसने पूरा गाना फिर से गाना शुरू किया।

आखिरी पंक्ति पर पहुँच कर उसने हाथ से दर्शकों को साथ देने का इशारा किया और फिर गाया,

“मैं हूँ पवन पुत्र...” और गला फाड़ “हनुमाऽऽऽन!” दर्शकों ने दिल खोल के जोड़ा। बाहर मैदान से बदरी की वफ़ादार भैसों ने कोरस में अपना सुर लगाया “म्हाँ! म्हाँऽऽऽ।”

जब थके हुए, प्रसन्न बच्चे घर की तरफ़ चले, कल्लू ने संतोष की गहरी साँस भर के कहा “वाह! क्या सुपर-हिट रामलीला थी!”

This book was made possible by Pratham Books' StoryWeaver platform. Content under Creative Commons licenses can be downloaded, translated and can even be used to create new stories provided you give appropriate credit, and indicate if changes were made. To know more about this, and the full terms of use and attribution, please visit the following link.

Story Attribution:

This story: कल्लू की दुनिया-२: मंच पर खिलंदड़ीis translated by Manisha Chaudhry . The © for this translation lies with Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Based on Original story: 'Monkey Business on Stage - Kallu's World 2', by Subhadra Sen Gupta . © Pratham Books , 2011. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Other Credits:

This book has been published on StoryWeaver by Pratham Books. Pratham Books is a not-for-profit organization that publishes books in multiple Indian languages to promote reading among children. www.prathambooks.org

Illustration Attributions:

Cover page: Scene from a mythological play by Tapas Guha © Pratham Books, 2011. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 3: Two girls talking as they walk together, by Tapas Guha © Pratham Books, 2011. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 6: A group of children sitting and talking under a tree, by Tapas Guha © Pratham Books, 2011. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 13: Actors in a play, by Tapas Guha © Pratham Books, 2011. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 18: A man with a tail, by Tapas Guha © Pratham Books, 2011. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions

Some rights reserved. This book is CC-BY-4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

कल्लू की दुनिया-२: मंच पर खिलदड़ी

(Hindi)

खजूरिया में आपका स्वागत है। इस गाँव में कल्लू और उसके दोस्त रोज़ कुछ नया कारनामा कर दिखाते हैं। कभी गाँव की रुढ़ियों पे सवाल उठाते हैं तो कभी किसी की अकड़ निकाल के गाँव में नये विचारों की ताज़ी हवा का झोंका लाते हैं। पढ़ते-खेलते, छोटी-बड़ी खुशियों और दुखों को लिये, कल्लू और उसके दोस्तों की ज़िन्दगी में शरीक होइये। दशहरा पास आ रहा है और मास्टर जी की सालाना रामलीला का सबको बेसब्री से इन्तज़ार है। मास्टर जी की रामायण इस बार कौन सा नया मोड़ लेगी? पढ़िये इसी की रोचक कथा।

यह पठन स्तर ४ की किताब है, उन बच्चों के लिए जो पढ़ने में प्रवीण हैं।

PRATHAM BOOKS storyweaver

Pratham Books goes digital to weave a whole new chapter in the realm of multilingual children's stories. Knitting together children, authors, illustrators and publishers. Folding in teachers, and translators. To create a rich fabric of openly licensed multilingual stories for the children of India and the world. Our unique online platform, StoryWeaver, is a playground where children, parents, teachers and librarians can get creative. Come, start weaving today, and help us get a book in every child's hand!